नासिरा शर्मा के उपन्यासों में चित्रित नारी शिक्षा

लिजा अच्चामा जार्ज
शोध छात्र
कातलिकेट्ट कॉलज, पत्तनमतिट्टा
महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय, कोट्टयम
Email-lijaabraham2016@gmail.com

सार

अबला नारी को सबला बनाने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में समानता सिद्ध करने की जरूरत है।आज नारी पुरानी विवशता, अप्रासंगिक लज्जा, दीनता आदि से मुक्त होकर निष्ठा से सफलता का इतिहास रच रही है। आज नारी की जीवन शैली, रहन–सहन, वैचारिक धारा आदि में बडा परिवर्तन आया है। आज अध्ययन, अध्यापन, फिल्म, संगीत–नृत्य, कला, संस्था के सर्वोच्च पद, सार्वजनिक संगठनों आदि अनवरत क्षेत्रों में स्त्री की सफलता दीखती हैं। नासिरा जी नारी की प्रगति के साथ है तथा नारी शोषण के विरुद्ध आवाज बुलन्द कराने में आगे हैं।

बीज शब्द

नारी शिक्षा, पुरुष वर्चस्विता, सुधार, सफलता, आत्मनिर्भर

परिचय

समकालीन कथा लेखन के सशक्त हस्ताक्षर के रूप में नासिरा शर्मा की उपस्थिति महत्वपूर्ण है। उनका साहित्य सृजन बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशकों से प्रारम्भ हुआ और आज भी वे सृजनरत हैं। साहित्य जगत में आये नये विचारों और मूल्यों ने समाज में परिवर्तन लाने का भरसक प्रयत्न किया। नासिरा जी अपने लेखन द्वारा पाठक को झकझोरने की क्षमता ही नहीं देती बल्कि अपने गहन अनुभव ज्ञान द्वरा सामाजिक–सांस्कृतिक–आर्थिक परिदृश्यों को मापने में भी कामयाब हुई हैं। नासिरा जी नारी की प्रगति के साथ है तथा नारी शोषण के विरुद्ध आवाज बुलन्द कराने में आगे हैं।

मानव की विकास यात्रा में आधी आबादी, महिलाओं की भागीदारी बड़ी मात्रा में है फिर भी पुरुष वर्चस्वितावाली भारतीय सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं को पुरुष के समान राष्ट्रीय और सामाजिक विकास में पुरुष का सहयोगी और सहभागी बनकर अपनी सशक्त भूमिका अदा करने का परिवेश मिलना आवश्यक ही है। स्त्री–पुरुष में सह–अस्तित्व और पारस्परिक विश्वास की जागृति तथा दोनों अपने–अपने संकुचित दायरे से मुक्त होकर जीवन सरिता की मुख्य धारा के प्रवाह में सम्मिलित होकर लक्ष्य की ओर अग्रसर होना आज की महती आवश्यकता है।

नारी की पहचान भी एक संपूर्ण व्यक्ति के रूप में सामाजिक सामंजस्य के लिए अनिवार्य है। गौतम सान्याल नारी की परिकल्पना देते हुए कहता है – "नारी वह जीव है जो आजीवन पुरुष की सेवा में लगी होती है। प्रेम का

अर्थ नारी के लिए सेवा है, पुरुष के लिए मेवा। प्रेम का अर्थ नारी के लिए तर्पण है, समर्पण है, त्याग है, वर्जन है जबकि पुरुष के लिए ग्रहण है, मात्र ग्रहण है और ग्रहण है।" आधी पुरुष समाज नारी को उपभोग की वस्तु, त्यागी और पति की सेवक मात्र समझता है।

शोध विधि

विवरणात्मक शैली।

परिणाम और चर्चा

नारी को सम्मानजनक स्थान और सही अर्थ में स्वातंत्र्य की प्राप्ति अनिवार्य है। "दुनिया की पुरुष प्रधान संस्कृति ने स्त्री को उसके जैविक रूप में स्वीकारा नहीं था। व्यक्ति के रूप में स्वीकारा जाए, ऐसी उसकी माँग बहुत पुरानी है। संभवतः विश्व भर में ऐसी माँग करने वाली तेजस्वी स्त्री द्रैपदी है जिसने भरे दरबार में तत्कालीन सभी तथाकथित पुरुषों से यह प्रश्न किया था कि मैं चूत में लगाई जाने वाली वस्तु हुँ या व्यक्ति? नारी मुक्ति का अर्थ ही है नारी की वस्तु रूप से मुक्ति।" पिछले हजारों सालों से स्त्री की दशा में कई तरह के बदलाव आये हैं किन्तु प्रतीक्षानुसार आशाजनक नहीं है।

राष्ट्र के विकास के लिए महिलाओं को शिक्षित होना अनिवार्य है। भारतीय शिक्षा आयोग ने नारीशिक्षा के संबन्ध में अनेक उत्साहवर्धक सुझाव प्रस्तुत किए हैं। स्त्री–पुरुष को संवैधानिक रूप से समानता का अधिकार मिला है। ष्संविधान के अनुच्छेद 45 के तहत.... स्त्रियों को उच्च से उच्च शिक्षा प्राप्त करने के अवसर उपलब्ध हैं। .... विश्वविद्यालय शिक्षा समिति, नारी–शिक्षा की राष्ट्रीय समिति, स्त्री शिक्षा सार्वजनिक सहयोग समिति, कोठारी कमीशन, राष्ट्रीय शिक्षा नीति परीक्षण समिति, केन्द्रीय सलाहकार समिति ने स्त्री शिक्षा के प्रचार–प्रसार व उसकी गुणवत्ता में सुधार हेतु सुझावों के साथ–साथ स्त्रियों को शिक्षा की ओर आकर्षित करने के सुझाव भी दिए।ष बीसवीं सदी के प्रारंभिक समय से नारी शिक्षा का प्रचार प्रचुर मात्रा में हुआ।

नारी को पहली बार अन्तरराष्ट्रीय मंच पर उपस्थित करने का प्रयत्न स्वामी विवेकानन्द ने किया। उनके अनुसार पुरुष और स्त्री में भेद त्यागना ही देश की उन्नति का पहला चरण है। उन्होंने घोषणा की – "हम स्त्रियों को उचित शिक्षा दे और उसके उपरान्त वे स्वयं अपनी समस्याओं को सुलझा लेंगीं।ष अर्थात शिक्षा के जरिए वह स्वयं अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए आत्मनिर्भर हो जाएगी। सुनंत कौर का मानना है कि ष्शिक्षा ने नारी को समस्त अंधविश्वासों से मुक्त कर तार्किक दृष्टिकोण प्रदान किया है।ष नासिरा शर्मा नारी शिक्षा पर जोर देनेवाली लेखिका है। ष्शाल्मलीष में शिक्षित और अशिक्षित औरतों को लेकर पुरुष समाज के विचार को व्यक्त करते हुए शाल्मली कहती है, ष्जब औरतें अनपढ़, अनगढ़ मिलती हैं, तो पुरुष उनसे कुढ़े–ऊबे बाहर की तरफ भागते हैं और जब शिक्षित, चुस्त औरतें पत्नी के रूप में मिल जाती हैं तो उन्हें उनसे घबराहट का अहसास होता है और भयभीत होकर तीसरी किस्म की औरतों की तरफ भागते हैं।" वास्तव में पुरुष वर्ग स्वयं यह नहीं जानता है कि उन्हें किस किस्म की स्त्री को पत्नी के रूप में स्वीकार करना चाहिए। आज की अधिकांश स्त्रियाँ शिक्षित हैं। मुँह तोड जवाब देने को समर्थ नारियाँ किसी भी संघर्ष का सामना करने को सक्षम हैं।

आज की दुनिया शिक्षित नारी को सम्मान देती है। 'पारिजात' में अख्तर भाई का कहना है, ष्लड़का तो है तभी पूछा था, लड़कियाँ तुम्हारी देखने–सुनने में ऐसी हैं कि इनको पढ़े–लिखे लड़के, सरकारी नौकरी वाले मिल सकते

हैं, मगर जो मुश्किल है वह यह कि उन सालों को पढ़ी–लिखी लड़की चाहिए।ष् शिक्षित और नौकरीपेशा नारी को विवाह करने के लिए आज लंबी कतार देख सकते हैं।

'कागज की नाव' में लड़कियों की शिक्षा को सम्मान देते हुए जावेद कहता है – "चलो इलाका पिछड़ा है मगर जनाब जहाँ लड़कियां बी.ए, एम.ए हैं, हम उन्हें घर की मैना बना देते हैं। काम मर्दों के लिए नहीं है तो उन्हें क्या मिलेगा।" समाज लड़कियों की आजादी से डरती है। पुरुष के अधीन, उनके कहने पर मुँह बंद करके सब कुछ सहना ही नारी की नियती मानी जाती है।

'बहिश्ते जहरा' में महलका अपनी जिन्दगी का पन्ना खोलते वक्त अपने आप में कहती है, "शादी से पहले तय हुआ था हम आगे पढ़ाई जारी रखेंगे मगर अब कहते हैं कि हमें कुछ भी याद नहीं।" आज अनेक लड़कियों के साथ यही होता हुआ देख सकता है कि शादि के पहले पढ़ाने व शिक्षा दिलवाने का वादा ससुरालवाले करते हैं लेकिन बाद में उसे बंद पिंजड़े की तोता होकर जीना पडता है। उपन्यास में परी, तय्यबा और अख्तर को राजनीतिक विद्रोहों के कारण अपनी पढ़ाई छोडनी पड़ती है। अब उनकी पी.एच.डी. के दाखिले की आशा समाप्त हो चुकी थी। संदर्भ और वातावरण चाहे राजनीतिक हो, आर्थिक हो या सामाजिक, स्त्रियों को ही अधिक कठिनाईयाँ झेलनी पड़ती हैं। उनके लिए शिक्षा का द्वार बन्द हो जाना मुसीबत ही है।

आर्थिक अभाव के कारण भी नारी शिक्षा से वंचित होती दिखाई देती है। "आज ऐसे परिवार दिखाई देते हैं, जो अपनी पेट की आग बुझाने के लिए दिन–रात अलग–अलग जगहों में काम करते रहते हैं। उनको अपनी रोजी–रोटी कमाने के लिए स्थलान्तरित होना पड़ता है। जिससे उनकी लड़कियाँ शिक्षा से वंचित हो जाती हैं।" परंतु भारत के कुछ इलाकों में लड़कियों की शिक्षा संबन्धी दोषपूर्ण, संकीर्ण व नकारात्मक दृष्टिकोण रखते भी हैं। भारत की पंचवर्षीय योजनाओं ने नारी शिक्षा हेतु किये अनेक प्रयासों ने भी सन्तोषप्रद मुकाम नहीं हासिल किया है। स्वामी दयानंद सरस्वती का कहना है कि, "नारी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो गृह कार्यों के साथ–साथ सामाजिक जीवन मे भी लाभप्रद हो सके तथा जिससे नारी आर्थिक दृष्टि से स्वयं को स्वतंत्र अनुभव कर सके।" नारी की स्थिति में सुधार लाने के लिए नारी को सुशिक्षित बनाना अनिवार्य ही है। नासिरा जी इसी मान्यता की पक्षधर हैं।

निष्कर्ष–

आज की नारी में शिक्षा की मदद से समझदारी और अकल आयी है। नारी ने अच्छी तरह समझ लिया है कि युगों से प्रचलित पराधीन नारी का वह फारमुला एकदम निरर्थक है। नारी यह नहीं मानती है कि पुरुष उसका स्वामी है और नारी केवल परिवार के लिए दासी बनकर परिवार की व्यवस्था करें और उसका कर्तव्य दासता की प्रतिनिधि गृहिणी के रूप में केवल घर–गृहस्थी चलाना मात्र है। आज की नारी सास–ननद का पाव दबाकर, पति के मनोरंजन के लिए या उनकी इच्छा पूर्ति के लिए अपनी पीडा व व्याधि को भूलकर भी तन–मन से सज–संवारकर गृहिणी का पदनाम पाने को तैयार नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ–

- नासिरा शर्मा – शाल्मली, सरस्वती विहार, दिल्ली, प्रथम सं. 1987, पृ. 154
- नासिरा शर्मा–पारिजात, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम पैपर बैंक सं.2014, पृ. 258
- नासिरा शर्मा – कागज की नाव, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम सं. 2014,पृ. 131
- नासिरा शर्मा – बहिश्ते जहरा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम सं. 2009, पृ. 182
- डॉ. बबनराव बोडके – बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक की कहानियों में नारी,विकास प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं. 2008, पृ. 305
- मीरा देसाई – भारतीय समाज में नारी, मैकमिलन इंड्या लि., दिल्ली, सं. 1982, पृ. 106
- राजेन्द्र यादव, अर्चना वर्मा – औरत रू उत्तरकथा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,सं. 2002, पृ. 197
- रेखा कस्तवार –स्त्री चिन्तन की चुनौतियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,सं. 2006, पृ. 86
- सुनंत कौर – समकालीन हिन्दी कहानीरू स्त्री पुरुष संबन्ध, अभिव्यंजना प्रकाशन, दिल्ली,सं. 1991, पृ. 33
- डॉ. सूर्यनारायण रणसूभे – उपलब्धि रू नारीवादी या नारी मुक्ति की अवधारणा,मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषत, मध्यप्रदेश, सं. 2012, पृ. 54
- स्वामि विवेकानन्द – भारतीय नारी, रामकृष्ण मठ, नागपुर, सं. 2018, पृ. 5